International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(1): 89-91

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(1): 89-91
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 03-01-2019
Accepted: 11-02-2019

डॉ0 नमिता अग्रवाल
एसो0 प्रो0 संस्कृत, अतर्रा पी0जी0कालेज, अतर्रा बाँदा, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ0 नमिता अग्रवाल
एसो0 प्रो0 संस्कृत, अतर्रा पी0जी0कालेज, अतर्रा बाँदा, उत्तर प्रदेश, भारत

संस्कृत वीथी–उद्भव एवम् विकास

डॉ0 नमिता अग्रवाल

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2019.v5.i1a.1749

प्रस्तावना

काव्य के दो प्रकार होते हैं– श्रव्य काव्य एवं दृश्य काव्य। श्रव्य काव्य सुनने या पढ़ने की वस्तु होती है। इसमें श्रवणेन्द्रिय के द्वारा बुद्धि एवं हृदय का सम्पर्क काव्य के साथ होता है। इसके विपरीत दृश्य काव्य मुख्य रूप से देखने की वस्तु है। श्रव्य काव्य का कोई रंगमंच नहीं होता, किन्तु दृश्य काव्य रंगमंच की वस्तु होता है। उसका प्रमुख उद्देश्य अभिनय के द्वारा सहृदय सामाजिकों का मनोरंजन करते हुए उनमें रसोद्बोध कराना होता है। दृश्य काव्य का ही दूसरा नाम रूपक भी है। इसे रूपक इसलिये कहा जाता है कि इसमें नट् विभिन्न पात्रों का रूप धारण कर अभिनय करता है, उसमें उन–उन पात्रों का आरोप किया जाता है। दशरूपककार धन×जय ने रूपक को रूप और नाट्य शब्दों से वर्णित करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा है। 'रूपकं तत्समारोपात्', 'रूपं दृश्यतयोच्यते' तथा 'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्' ।[1]

वस्तुतः नाट्य, रूप और रूपक ये तीनों एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। दृश्य काव्य को नेत्रों से देखा जाता है। इसलिए इसे रूप साहित्य भी कहते हैं। इसी प्रकार कृत्रिम पात्रों में यथार्थ पात्रों का आरोप कर लिया जाता है। इसलिए इसे रूपक साहित्य भी कह सकते हैं तथा जब कृत्रिम पात्र (नट् आदि) आँकि, वाचिक, आहार्य और सात्विक आदि अभिनयों के माध्यम से यथार्थ पात्रों की विभिन्न अवस्थाओं (बाल्यावस्था, युवावस्था तथा वृद्धावस्था) का अनुकरण करते हैं, तो उसे हम नाट्य कहते हैं। इसमें अभिनय की प्रधानता होने के साथ–साथ रस की प्रधानता भी होती है। प्रत्येक नाट्य में अपनी कथावस्तु, पात्रों का चित्रण और रस की पूर्ण अभिव्यक्ति होती है। यही तीन–वस्तु, नेता और रस ही नाट्य साहित्य का भेदक तत्व सिद्ध होता है– ''वस्तु, नेता रसस्तेषां भेदकः''[2]।

नाट्य दृश्य काव्य के अन्तर्गत आता है। इसका रंगमंच होता है और यह रंगशाला में प्रस्तुत किया जाता है। इसका उद्देश्य अभिनय के द्वारा सहृदय सामाजिकों का मनोरंजन करते हुए उनमें रसोद्बोध करना होता है। रस पर आधारित होने के कारण ये दस प्रकार के होते हैं–

> नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः
> व्यायोग समवकारौ वीच्यŠ. इहामृगः इतिः[3]

दशरूपककार धनंजय ने रूपक के दस प्रकार बताये हैं। विश्वनाथ तथा भरत मुनि के अनुसार रूपकों से सम्बद्ध दस उप रूपक भी हुआ करते हैं, किन्तु उप–रूपकों का उल्लेख दसरूपककार धन×जय एवं धनिक ने नहीं किया है।

वीथी का विकास

प्रमुख वीथियों का सामान्य परिचय

इस प्रकार संस्कृत नाट्याचार्यों के द्वारा स्वीकृत 10 रूपकों में एक भेद ''वीथी'' भी है। सभी नाट्याचार्यो ने अपने– अपने लक्षण ग्रन्थो मे ''वीथी'' रूपक का रूप निर्देश किया है। और साथ ही कुछ वीथियों का नाम भी उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया है। अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण किये जाने पर भी अद्यावधि ''वीथी'' रूपक पुस्तकारक रूप मे प्राप्त नहीं होते। विभिन्न आचार्यो के द्वारा भिन्न–भिन्न काल मे विभिन्न ''वीथी'' रूपक का नाम निर्देश किये जाने से इतना तो निश्चित प्राय है कि उन नाट्याचार्यों के समय में वे बीथियाँ निश्चित रूप से लिखी जा चुकी थी, किन्तु रचयिताओं के नाम का नाट्याचार्यों ने कहीं भी निर्देश नही किया। यह सम्भव हो सकता है कि अपने समय मे वे वीथियाँ ज्यादा सम्मान न प्राप्त कर सकी हों, या फिर नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से पूर्ण न हों, इन्ही करणों से वह वीथी विधा मे अन्य कवियों के द्वारा अछूती रही।

नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थों में वर्णित तथा अपने युग का प्रतिनिधित्व करने वाली कुछ वीथियाँ निम्नलिखित हैं–

बकुलवीथिका:
नाट्याचार्यो मे सर्वप्रथम सागरनन्दी ने वीथी का लक्षण करते समय ''बकुलवीथिका'' को उदाहरण स्वरूप निर्दिष्ट किया है–

> ''अथ वीथी। सा च त्रिभिः पात्रैः प्रयोक्तव्या।
> यथा बकुलवीथिका।''[4]

''बकुलवीथिका''की रचना सागर नन्दी से पुर्व या समकाल में की गयी होगी। अतः इसका रचनाकाल नवम् शताब्दी या दशम शताब्दी हो सकता है। इस वीथी मे मुख्य तीन पात्र ही हैं तथा यह वीथी के उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किये जाने के कारण नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से पूर्ण होगीं, ऐसा अनुमान किया जा सकता है।
भावप्रकाशनकार शारदातनय ने भी बकुलवीथिका [5] वीथी को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया है। अतः यह वीथी और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है किन्तु अप्राप्त वीथी होने के कारण इस वीथी की कथावस्तु आदि के विषय मे प्रमाणिकता से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है।

इन्दुलेखा :
शारदातनय ने वीथी का रूप निर्देश करते समय इस वीथी को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया है

> मुखनिर्वहणे सन्धीवीथ्या वृत्तिस्तु कैशिकी।
> द्वाभ्यां प्रयोज्या पात्राभ्यां क्वचिदेकेन वा भवेत्।।
> अङ्गी सर्वरसस्पर्शो श्रृङ् गारोऽस्याः प्रधानतः।
> युक्ता लास्याङ् गवीथ्यङगैः सम्यगुद्धात्यकादिभिः
> भवेयुर्वा न वेत्सस्यां लास्याङ् गान्याह कोहलः।
> वीथ्याः श्रृङ् गाररूपत्वाद्विधेयानीति भोजराट्।।
> एकाङ्कैव भवेद्वीथी रसः सूच्योऽत्र सम्भूतः।
> यथा बकुलवीथी स्यादिन्दुलेखादयो यथा।।[6]

इसके अलावा शारदातनय ने वीथी के चतुर्थ अंग ''त्रिगत'' के निरूपण के प्रसंग में भी ''इन्दुलेखा'' वीथी का उल्लेख पुनः किया है–

> ''त्रिगतं त्विन्दुलेखायां वीथ्यां राज्ञाऽभिधीयते।
> किन्तु कलहंसनादो मधुरो मधुपायिनां नु भंकारः।।
> ह्रदयगतवेदनायास्तस्या नु सनूपुरश्चरणः''।।[7]

भोज ने ''श्रृंगार–प्रकाश'' तथा रामचन्द्र गुणचन्द्र ने **''**नाट्यदर्पणम्''8 मे भी यही श्लोक उद्धृत किया है। किन्तु इन दोनों आचार्यो ने ''ह्रदयगत वेदनायाः'' के स्थान पर ''ह्रदयगत देवतायाः'' पाठ किया है। किन्तु किसी भी आचार्य ने इस वीथी के लेखक का नाम निर्देश नहीं किया है। चूँकि इस वीथी का निर्देश शारदातनय के अलावा रामचन्द्र गुणचन्द्र ने भी किया है, अतः इस वीथी का रचना काल 11वीं शताब्दी के आसपास रहा होगा। ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 12वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में देश में मुसलमानों के प्रभुत्व की स्थापना तथा वैदिक धर्मावलम्बियों के पतन के साथ–साथ बौद्ध धर्म की भी अवनति होने लगी थी। विलासी राजाओं के साथ–साथ भिक्षु, कवि तथा दर्शनशास्त्री आदि भी स्व–कर्तव्य पथ भ्रष्ट होकर वेश्यागामी और मद्यपान के कारण नशे में चूर और संभ्रान्त हो गये थे। निश्चय ही इसी पृष्ठभूमि में ''इन्दुलेखा'' वीथी का सृजन किया गया होगा। यह वीथी नाट्य शास्त्रीय दृष्टि से एक सफल वीथी है।

'पाण्डवानन्दम्':
शारदातनय ने वीथी के प्रथम और ''उद्घात्यक'' के उदाहरण में इस वीथी का उल्लेख किया है।[9] नाट्य दर्पणकार रामचन्द्र गुणचन्द्र ने भी ''उद्घात्यक'' वीथ्यंग के उदाहरण रूप में इसका उल्लेख किया है।[10] वीथी के प्रसंग में इसका निर्देश होने के कारण निश्चय ही यह वीथी है। किन्तु इस वीथी का रचयिता कौन है यह निश्चित नहीं है। इस वीथी का रचनाकार ग्यारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध और 12वीं शताब्दी का पूर्वाद्ध हो सकता है।

'माधवी':
श्री शिंगभूपाल ने ''रसार्णवसुधाकर'' में वीथी का लक्षण करते समय उदाहरण स्वरूप इस वीथी का उल्लेख किया है–

> ''सूच्यप्रधानशृङ्गारा मुखनिर्वहणान्विता।
> एकयोज्या द्वियोज्या वा कैशिकीवृत्तिनिर्भरा।।
> वीथ्यङगसहितैकाङका वीथीति कथिता बुधैः।
> अस्यां प्रायेण लास्याङग दशकं योजयेन्न वा।।
> सामान्या परकीया वा नायिकात्रानुरागिणी।
> वीथ्यङ्ग प्रायवस्तुत्वान्नोचिता कुलपालिका।।
> लक्ष्यमस्यास्तु विज्ञेयं माधवीवीथिकादिकम्''।।[11]

इस वीथी की रचना 14वीं शताब्दी के आस–पास की गयी होगी। यह नाट्याचार्यों द्वारा स्वीकृत वीथी के लक्षणों से निश्चय ही युक्त होगी यह अनुमान किया जा सकता है।

'मालविका':
साहित्य दर्पणकार विश्वनाथ ने इस वीथी को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया है, किन्तु इस वीथी का भी लेखक अज्ञात ही है। यह वीथी भी 14वीं शताब्दी के आसपास ही लिखी गयी होगी।

सीताकल्याण–वीथी
अठारवीं शताब्दी के नाटककार वेंकायार्य द्वारा रचित यह वीथी है।[12] कृष्णमाचार्य ने वेंकायार्य के स्थान पर इनका प्रधानि वेंकटभूपति के नाम से उल्लेख किया है।[13] यह वीथी अप्रकाशित है तथा आन्ध्र लिपि में है तथा इसकी चार हस्तलिखित प्रतियाँ औरियेण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट मैसूर में मिलती है।[14]
इस वीथी की कथावस्तु रामायण पर आधारित है। इसमें राम–सीता के विवाह का वर्ण है। विश्वामित्र के साथ राम–लक्ष्मण जनकपुरी सीता–स्वयंबर में पहुंचते हैं। विश्वामित्र की आज्ञोपरान्त राम शिव–धनुष सन्धान करते हैं। जनक के द्वारा महराज दशरथ सपरिवार अयोध्या से बुलाये जाते हैं। राम आदि चारों कुमारों का विवाह सीता आदि चारों राजकुमारियों से क्रमशः सम्पन्न होता है। धनुर्भंग से कुपित परशुराम को राम पराजित करते हैं तथा सभी प्रसन्नता के साथ अयोध्या प्रत्यागमन करते हैं। मात्र इतनी ही घटना इस वीथी की कथावस्तु के रूप में प्रयुक्त की गयी है।

'लीलावती' वीथी
अठारवीं शताब्दी में ही रामपाणिवाद द्वारा विरचित यह एक प्रकाशित वीथी है तथा नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से एक सफल वीथी है। इसकी कथावस्तु कवि–कल्पित अर्थात् उत्पाद्य है तथा इसमें मात्र दो ही पात्र हैं।

'चन्द्रिका' वीथी
यह वीथी भी एक अप्रकाशित वीथी है। अठारहवीं शताब्दी के नाटककार रामपाणिवाद द्वारा ही विरचित है तथा इसकी कथावस्तु भी कवि–कल्पित अर्थात् उत्पाद्य है। इस वीथी में भी मात्र दो ही पात्र आद्यन्त रंगमंच पर उपस्थित रहते हैं। यह वीथी के लक्षणों से युक्त तथा अभिनय की दृष्टि से एक सफल वीथी है। इस वीथी का रंगमंच पर सफलतापूर्वक अभिनय भी किया जा सकता है।

प्रेमाभिराम
कवि रविपति द्वारा विरचित यह एक अप्रकाशित वीथी है। डॉ0 वीरबाला शर्मा ने वीथी की तालिका प्रस्तुत करते समय इस वीथी

का उल्लेख किया है।[15] किन्तु इस वीथी की रचना काल, वर्ण्य–विषय आदि का वर्णन नहीं किया है।

राधा

यह भी अज्ञात लेखक की अज्ञात काल की रचना है। इसका उल्लेख भी डॉ0 वीरवाला शर्मा ने वीथी की तालिका सूची प्रस्तुत करते समय किया है।[16]

इस प्रकार वीथी रूपक का लेखन नवम अथवा दशम शताब्दी से प्रारम्भ हुआ तथा 18वीं शताब्दी तक अक्षुण्य गति से चलता रहा। दुर्भाग्यवश ये सभी वीथियाँ प्रकाश में आने के पूर्व ही क्षतिग्रस्त होकर काल के गर्त्त में दब गयीं और इनके नामोल्लेख के अतिरिक्त इनके विषय में कुछ भी ज्ञात न हो सका। मात्र तीन वीथियाँ– ''सीता कल्याण'' वीथी, ''लीलावती'' वीथी और ''चन्द्रिका'' वीथी प्राप्त हो सकी। किन्तु इतना तो निश्चित है कि वीथी रूपक भेद कवियों के द्वारा अछूता नहीं रहा, विभिन्न काल में विभिन्न कवियों ने विभिन्न वीथियों की रचना करके इस रूपक भेद को जीवन्त रखा।

संदर्भ–

1. धन×जय–दशरूपकम्, पृ0सं0 6–7, व्याख्याकार डॉ0 श्रीनिवासशास्त्रिणः, साहित्य भण्डार, मेरठ।
2. धन×जय–दशरूपकम्, पृ0सं0 12, व्याख्याकार डॉ0 श्रीनिवासशास्त्रिणः, साहित्य भण्डार, मेरठ।
3. धन×जय–दशरूपकम्, पृ0सं0 8, व्याख्याकार डॉ0 श्रीनिवासशास्त्रिणः, साहित्य भण्डार, मेरठ।
4. सागरनन्दी– नाटक लक्षणरत्नकोष, पृ0सं0 277।
5. शारदा, भावप्रकाशन, अष्टमोऽधिकार, पृ0सं0 251।
6. शारदातनत, भावप्रकाशन, अष्टमोऽधिकार, पृसं0–251।
7. शारदातनत, भावप्रकाशन, अष्टमोऽधिकार, पृ0सं0 232, पंक्ति 13।
8. रामचन्द्र गुणचन्द्र नाट्यदर्पण, पृ0सं0 126।
9. गूढार्थपदपर्यायमूलैकालापयोर्द्वयोः।
   यथा हि पाण्डवानन्दे सा प्रश्नोत्तरमालिका।।
   शारदातनय, भाव प्रकाशन, अष्टमोऽधिकार, पृ0सं0 230।
10. रामचन्द्र गुणचन्द्र, नाट्यदर्पण, पृ0सं0 132।
11. श्री शिङ्गभूपाल, रसार्णवसुधाकर, 3/265–267, पृ0सं0 173।
12. बिहारीलाल नागार्च– अष्टादश शतकस्य तिस्त्रो वीथ्यः, सागरिका पत्रिका, पंचम वर्ष तृतीय अंक, सागर विद्यालय, सागर।
13. एम0 कृष्णमाचार्य, हिस्ट्री ऑफ क्लासिकल संस्कृत लिटरेचर, पृ0सं0 705।
14. वेंकायार्य, सीताकल्याण वीथी, हस्तलिखित ग्रन्थ संख्या– बी–192, 2773, 2586 तथा एस0बी0 360, ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, मैसूर।
15. डॉ0 वीरबाला शर्मा, संस्कृत में एकांकी रूपक, पृ0सं0 27।